दिनांक : 27.05.2020

कॉलेज का नाम : गाज़ाही कॉलेज ख़गड़िया

लेखक का नाम : डॉ. कारुक आपथा / अतिथि शिक्षक

स्नातक : प्रथम खंड (प्रायोगिक)

विषय : प्राचीन इतिहास (कला)

इकाई : चार

पत्र : प्रथम

प्रकरण : सिंधु घाटी की सभ्यता

आर्थिक जीवन (Economic Life) : कृषि —

सिंधु घाटी के लोगों की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक थी, सिंधु घाटी की खुदाई में समृद्ध गाँवों और नगरों के अवशेष मिले हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे विशाल नगरों का होना, ये इस बात को प्रमाणित करता है कि इन नगरों की आबादी घनी होगी और इस घनी

आबादी को खिलाने के लिए वहाँ पर्याप्त मात्रा में भोजन की सामग्रियाँ उपलब्ध होगी। सिंधु नदी की घाटी उपजाऊ थी। नगर की समृद्धि और समुचित व्यवस्था वहाँ के लोगों की आर्थिक सम्पन्नता की द्योतिका है। सिंधु नदी की घाटी सिंधु प्रदेश में वर्षा अधिक होती थी और फसल भी अच्छी होती थी। शहर के निवासियों की जीविका आस-पास के लोगों के गाँवों के किसानों की खेती से चलती थी। वहाँ के निवासी गेहूँ, जौ, मटर, तिल, सरसों की खेती करते थे। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में धान की खेती से चलती थी। वहाँ धान की खेती का कोई प्रमाण नहीं मिला है। लोथल और रंगपुर अहमदाबाद के निकट में उत्तर हड़प्पा युग (Late Harappans) की मिट्टी और मृत्पात्रों में लिपटे हुए चोकर और अन्न के कण

मिले हैं। सौराष्ट्र मे बाजरा की खेती होती थी। लोथल मे बाजरे के दाने मिले हैं। वहाँ के लोगो की आर्थिक सम्पन्नता लोथल के बाजरे के दाने मिले हैं। वहाँ के लोग अनार के फल से भी परिचित थे। अनाज के अतिरिक्त खजूर, तरबूज, केला, नींबू, अनार आदि फल भी उपजाए जाते थे। कपास की खेती भी होती थी और ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सिंधु घाटी के निवासी कपास पैदा करने वाले सबसे पुराने लोगो में से थे। अनाज पसीने के लिए चक्की और कूटने के लिए ऊखल का प्रयोग होता था। हड़प्पा संस्कृति निवासी सम्भवतः हल का प्रयोग नही करते थे। किंतु यह पता चलता है कि उनकी खेती फावड़े पर आधारित थी। कालीबंगा में प्राक् हड़प्पा संस्कृति के दौरान हलो द्वारा खेती जोतने

का प्रमाण मिलता है हल सम्भवतः लकड़ी के बने होते थे लेकिन यह निश्चित करना कठिन है कि हल खोदने के लिए पशुओं का उपयोग होता था या नहीं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि फसल को काटने के लिए यहां के निवासी पत्थर की हँसिया प्रयोग में लाते थे। सिंधु सभ्यता में मेसोपोटामिया की तरह नहरों से सिंचाई की व्यवस्था नहीं थी। नालियों की मदद से खेतों की सिंचाई होती थी।

पशुपालन:- सिंधु सभ्यता के लोग खेती करने के साथ साथ पशुपालते थे। बैल, भैंस, बकरे, भेड़ और सुअर उनके पालतू पशु थे। भेड़ और बकरी का पालन मांस, दूध और ऊन के लिए होता होगा। गाय और भैंस से दूध और घी की प्राप्ति होती थी। कुत्ता और बिल्ली को भी पालतू बना लिया गया

था। कुत्ता रखवाली के लिए और सम्भवतः शिकार में सहायता के लिए पाला जाता था। हड़प्पा से एक मूर्ति में कुत्ते को मुंह में एक खरगोश पकड़े हुए दिखाया गया। वे लोग गधे और ऊँट से भी परिचित थे इन पशुओं का उपयोग सम्भवतः बोझ ढोने के लिए होता था। घोड़े का अवशेष गुजरात के सुरकोतड़ा नामक स्थान से मिला है लेकिन घोड़े का इस्तेमाल नही होता है। वहाँ के निवासी हाथी से भी परिचित थे वे गैंडे से भी परिचित थे। वे हंस, बतख, खरगोश, बन्दर, हरिण, मुर्गी और तोता भी पालते थे। बारह-सिंघा सांभर हरिण इत्यादि का उपयोग मांस और खाल के लिए रहा होगा। बतख का चित्रण लोथल के बरतनों पर बहुत मिलता है। मोर का चित्रण भी प्रायः सभी महत्वपूर्ण स्थलों से प्राप्त बरतनो पर किया गया है।

Scanned with CamScanner

उद्योग धंधा:- कृषि और पशुपालन के अलावा अन्य छोटी छोटी दस्तकारियों के भी प्रमाण मिले है। सिंधु घाटी के निवासी पत्थर के औजारों का इस्तेमाल करते थे. लेकिन वे काँसे से परिचित थे। टीन और तांबा मिला कर काँसा तैयार किया जाता था। काँसे से बहुत से घरेलू बरतन और सामान मिले है। काँसे के विविध प्रकार के औजार और हथियार बनाये जाते थे। तांबे से बनी कुल्हाड़ियाँ छेनियाँ, छुरियां, तीर, आरियों आदि औजार मिले है। सुनार सोना, चाँदी और कीमती पत्थरो से आभूषण बनाते थे। तांबे के बने मछली पकड़ने के काँटे भी मिले है। ऐसा लगता है कि मछली पकड़ना सिंधु-प्रदेश के निवासियों का एक प्रमुख उद्योग था। खुदाई मे मछली की हड्डियो के अनेक ढेर मिले है। जिससे स्पष्ट है कि मछली

भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा था। मछली के अतिरिक्त सिंध के निवासियों भोजन में कछुए का मांस भी सम्मिलित रहा होगा। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल आदि स्थलों पर खुदाई से तरह-तरह के कछुओं की हड्डियाँ मिली है।

धातु निर्माण कला के अतिरिक्त सिंधुघाटी के निवासियों को कोई अन्य कलाओं और तकनीकी का ज्ञान था। शंख सीप, घोंघा, हड्डि, हाथी दाँत का काम होता था। वहाँ के निवासी सोना, चाँदी, पत्थर, सीप और चिकनी मिट्टी से मनका बनाते थे। मनका बनाने का व्यवसाय काफी उन्नत था। नाव बनाने की कला में भी वे लोग प्रवीण थे। सिंधु घाटी के शहरों में कई अन्य उद्योग-धंधों का विकास हुआ था। वस्त्र उद्योग से उत्पन्न अवस्था में था। मोहनजोदड़ो में सूती कपड़े का एक टुकड़ा मिला है।